National Conference on Sustainable Developments in Engineering, Science, Humanities and Management (NCSDESHM – 2025)
28th December, 2025, Raipur, Chhattisgarh, India.

CERTIFICATE NO: NCSDESHM /2025/ C1225947

जयशंकर प्रसाद जी की कविताओं का अध्ययन

Aprajita Kaiwartya

Research Scholar, Department of Hindi, Mansarovar Global University, Sehore, M.P., India.

सारांश

जयशंकर प्रसाद जी की कविताएँ हिंदी साहित्य में छायावाद और आधुनिक युग के संक्रमणकालीन विचारों का महत्वपूर्ण प्रतिनिधित्व करती हैं। उनकी रचनाएँ केवल भावुकता या सौंदर्यपूर्ण अनुभव तक सीमित नहीं हैं, बल्कि उनमें जीवन, समाज, प्रेम, मानवता और अध्यात्म जैसे गहन विषयों की झलक मिलती है। जयशंकर प्रसाद की भाषा में एक अद्वितीय मिठास और गहनता है, जो पाठक को भीतर तक प्रभावित करती है। उनकी कविताओं में छायावादी प्रवृत्ति के तहत प्रकृति का सुंदर चित्रण, मानवीय संवेदनाओं की अभिव्यक्ति और प्रेम के आदर्श भाव प्रमुख रूप से दिखाई देते हैं। इसके अलावा, उन्होंने भारतीय संस्कृति, इतिहास और पुरातन कथाओं से प्रेरणा लेकर अपनी कविताओं में राष्ट्रीय चेतना और लोकभावनाओं को भी शामिल किया। उनके गीत, मुक्तक और महाकाव्यात्मक काव्य में जीवन की जटिलताओं और मानसिक संघर्षों का सूक्ष्म दर्शन मिलता है। जयशंकर प्रसाद की रचनाओं में भावनाओं और विचारों का ऐसा संतुलन है, जो उन्हें केवल साहित्यिक दृष्टि से ही नहीं, बल्कि सामाजिक और दार्शनिक दृष्टि से भी महत्त्वपूर्ण बनाता है। उनके काव्य में आध्यात्मिक गहराई, राष्ट्रीय चेतना और मानव अनुभव की अभिव्यक्ति पाठक के मन में गहन छाप छोड़ती है।